सादर प्रकाशनार्थ

राष्ट्रोय युवा दिवस पर अजगरबहार में परिचर्चा आयोजित

अजगरबहार–12.01.2017–प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सानिध्य में राष्ट्रोय युवा दिवस पर एक परिचर्चा का शुभारम्भ शा.हाई स्कूल अजगरबहार में दीप प्रज्वलन करके किया गया। भ्राता केशरलाल कश्यप व्याख्याता ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी ने जीवन में सफल होने का रास्ता बतलाया कि कोई भी एक विचार लो और उसे ही जीवन बना लो, उसी के बारे में सोचो, उसके ही सपने देखो और दूसरे सभी विचारों को अलग रख दो। भ्राता अमर सिंह प्रेमी व्याख्याता पंचायत ने कहा कि सुदूर अंचल में इस तरह से आयोजित कार्यकमों से युवाओं में निश्चित ही एक नई जाग्रति आयेगी। भ्राता गिरधारी लाल यादव व्याख्याता पंचायत ने कहा कि स्वामी जी की यही कहना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैर पर खड़ा हो सके। भ्राता सुभाष चन्द्र महतो व्या.पं. ने कहा स्वामी जी ने आध्यात्मिकता की अलख सारे विश्व में जगाई, आपका मत था कि सभी शक्तियां तुम्हारे भीतर हैं, आप कुछ भी और सब कुछ कर सकते हैं। उद्योग शिक्षक नलिनी कांत ने कहा कि स्वामी जी ने पहले पूरे भारत का भ्रमण कर आम जनता की वास्तिविक स्थिति के बारे में जानकारी हासिल की। आपने देश विदेश में व्यक्तिगत और सार्वजनिक अनेकानेक व्याख्यान का आयोजन कर हिन्दुत्व और वेदान्त का प्रचार प्रसार किया। भ्राता कमल कर्माकर रिटा. महाप्रबंधक बाल्को ने बच्चों को प्रेरणा देते हुए कहा कि किसी भी बात में डरना नहीं है और न ही पीछे हटना है। स्वामी जी का भी यही कहना था कि विनम्र बनों, साहसी बनो और शक्तिशाली बनों। ब्रहमाकुमारी आशा बहन ने कहा कि एक नटखट एवं शरारती बालक के मन में बचपन से ही आध्यात्मिकता के प्रति रूचि थी। जब वे स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी के पास पहुंचे तो अंदर से आवाज आई कौन? तब नरेन्द्र बालक के मन में भी यही प्रश्न कोंध उठा था कि यही तो मैं जानने आया हूँ। आपने कहा कि राजयोग वह मार्ग है जिससे इंशान देवत्व के गुण प्राप्त करता है। स्वामी विवेकानंद जी का जीवन युवाओं और आने वाली पीढ़ी के लिये एक रोशनी का कार्य कर रहा है। ब्रह्माकुमार ए.पी.पाण्डेय ने कहा कि धार्मिक शिक्षा पुस्तकों से नहीं लेकिन आचरण और अच्छे संस्कारों के द्वारा दी जा सकती है। स्वामी जी का मत था कि हम जितने शांतचित्त होंगें और हमारे स्नायु जितने संतुलित रहेंगे और जितने ही हम अधिक प्रेम सम्पन्न होंगें– हमारा कार्य

भी उतना ही अधिक उत्तम होगा। छात्र छात्राओं ने भी अपनी प्रतिज्ञा और विचार व्यक्त किये।

मानवीय सेवा में, ब्रह्माकुमारी रूकमणी।